वेदों से कलाओं का जन्म

प्रकृति का चित्रण जगत् है, और प्रकृति की चित्रणकला जगत में अंकित है। भारतीय संस्कृति में "अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकाम:" अग्निहोत्र का बहुत महत्व माना गया है। अग्निहोत्र की स्थली वेदि है, वेदि परिष्कृत भूमि को कहते हैं। वेदि पर विराजित होने वाले यज्ञ भगवान् हैं, वे कलाओं के अविष्कार कर्ता हैं, उनका मंत्रों के द्वारा किया गया आस्तरण (विद्यौना) कुशा का है, यह वैदिक कला है।

इस कला का मनोरम चित्रण कवि कालिदास ने कुमार संभव में किया है - अवचित वलिपुष्पा वेदिसम्मार्गदक्ष, नियम विधि जला नां वर्हिषां चोपनेत्री। गिरिश मुपचचार प्रत्य हं सा सुकेशी, नियमित परिखेदा तच्छिरश्चन्द्र पादै:" पार्वतीजी प्रतिदिन यज्ञवेदि का स्मार्जन करती थी और पूजन के लिये फूल तथा नियम से जल एवं कुशाओं को लाती थी इस प्रकार शंकरजी की सेवा के करने से जो उन्हें श्रम होता था, उसे भी शंकर ललाट स्थित चन्द्र किरणों से दूर कर देते थे। इस श्लोक में वेदि सजाने की कला का वर्णन है, इस कला का मंत्रात्मक और प्रयोगात्मक दोनों रूप ही गहन गंभीर एवं रहस्यपूर्ण है। इस कला का अनुकरण साँझी में हुआ, जिसका शुद्ध नाम संध्या है, जिसका प्रचलन राजस्थान में अधिक है राजस्थान में तो सांझी की मूर्ति बनाकर ग्राम में फेरी लगाई जाती है। प्राय: नवरात्र में सांझी निर्माण होती है यह रंग भर फूलों से सजाई जाती है। दुर्गासप्तशती के रात्रि सूक्त में "त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवी जननी पए" संध्या शब्द आता है, यह शक्ति का ही रूप है, क्योंकि सांझी का निर्माण अधिकतर कुमारियाँ ही करती हैं तथा उसकी पूजा भी संध्या काल में ही होती है। ब्राम्हण लोग जो संध्या करते हैं। उसमें गायत्री जप भी करते हैं। गायत्री के ध्यान में "अहो देवि महादेवि सन्ध्ये विद्ये सरस्वति। अजरें अमरे चैव ब्रम्हयोनि र्नमोऽस्तुते"संध्या गायत्री ही है। जिस समय दिती ने कश्यप जी से हठ किया था उस समय संध्याकाल था अत: कश्यपजी ने दिति से कहा था कि इस समय भगवान् भूतनाथ शिव नंदी पर बैठकर जगन्मण्डल की परिक्रमा लगा रहे हैं फलस्वरूप सब प्राणियों का शुभाशुभ कर्म देख रहे हैं अत: भगवद्भजन करो । इस श्रीमदभागवत वर्णित आख्यान से प्रतीत होता है कि संध्या शिव की भक्ति है।

रघुवंश काव्य में जिस समय सुदक्षिण और दिलीप नंदिनी गाय की सेवा कर रहे थे, गाय दोनों के मध्य में स्थित थी उसका वर्ण रक्त था उन दोनों के बीच नंदिनी ने संध्या का रूप धारण कर रक्खा था "दिन क्षपामध्यगतेव संध्या"। सायंकाल में सूर्योदय के बाद जो लालिमा आकाश में दिखलाई पडती है वह अद्भूत प्रकृति सौन्दर्य देखने योग्य होता है। कर्मकाण्डियों के वेद में संबन्धित सर्वतोभद्र मण्डल, लिंगतोभद्रमंडल वास्तु मण्डल, योगिनी चक्र, क्षेत्रपाल चक्र आदि भी यंत्र स्वरूप कलाएँ है, जिनका संबंध साक्षात् वेद से ही है। कलाओं का रुप ही यंत्र है सांझी भी यंत्र है जो प्रयोगात्मक है किन्तु मंत्रों के द्वारा यंत्रो में उद्दीपन शक्ति आ जाती है। कल्याण पत्र में एक बार लेख प्रकाशित हुआ था उसमें लिखा था एक बार किसी ने एक काल भैरव का यंत्र बनाया जब उसने काल में रब की स्तुति गाई तब उस यंत्र से धूलिकण उडने लगे और काल भैरव की मूर्ति बन गई। इसी प्रकार अल्लाउद्दीन खिलजी के लगभग समय में भी केशव काश्मीरी भट्ट ने मथुरा में आकर कुशक गली में गोपाल यंत्र टाँक दिया था। उसके प्रभाव से जो भी मुसलमान यंत्र के नीचे होकर निकलता था। उसके नूर खतम हो जाते थे। और उसके चुटिया निकल आती थी ऐसा करने से चमत्कारी यवनं पराजित किया था। यंत्र कलाविज्ञान है तंत्रशास्त्र भी वेदों का ही अंग है। स्वस्तिक चिन्ह-गणेश का तथा ओम् का प्रतीक है। स्वस्तिक की लेखन कला अनादिकाल संसिद्ध है। यंत्र कला के बाद विशेष भावना होने के कारण मूर्तिकला ने जन्म लिया। मूर्तिकला के लिये मथुरा प्रसिद्ध है । वेद में मूर्त तथा अमुर्त दोनों प्रकार के भगवान् के रुप हैं। जीवकला ब्रम्ह(वेद)की कला है। भागवत के एकादश स्कन्ध में जीव को अक्षर(वर्णपुज)माना है,ऐसा ही तांत्रिक भी मानते हैं। कला एक प्रकार का प्रकृति का संकेत है जो व्यापक विज्ञान है नटकाला या नाट्य जिसको पंचमवेद माना गया है। महाभीठय में भी नट का नाम मिलता है तथा पाणिनि मे सूत्र में तथा धातु पाठ में भी नट शब्द मिलता है। विद्याओं के ओर कलाओं के स्वामी शिव हैं। भागवत में कालियनाग लीला में श्रीकृष्ण ने कालियनाग के फणों पर नृत्य किया था "नारायणोलिखलकलादिगुरूर्ननर्त" संपूर्ण कलाओं के आदि गुरू नारायण कृष्ण को आदि गुरू कहा है। नारायण और शिव तो अभिन्न है प्रपरं च कृष्ण में रद्रकला (वटुक कला) का निवेश है । तत तत थेई इत्यादि ध्वनि का स्पष्ट अर्थ नहीं है तथापि यह विज्ञान आकर्षण, स्तंभन, मोहन आदि क्रियाओं को निष्पन्न करता है। ब्रजांगताओं का आकर्षण और मोहन के साथ उनका स्तंभन भी हो गया था जभी तो वापिस लौट न सकी। कला सूक्ष्म भी है और स्थूल भी। स्थूल कला भौतिक है, दृश्यमान है। चित्रकला आदि अनुकरण कलाएँ स्थूल स्वरूप है। स्मक्ष्मकला तो इन्दुकला है जिसे शिवधारण करते हैं उसी के संकेत से ये सब कलाएँ विविध रूप में लोक में प्रतिभासित हो रही हैं ।

पाणिनिशिक्षा में "त्रिषष्टिश्चतु:षष्टिर्वा वर्णा: शंभुमते मता:" शंभु के गत में चौसठ वर्ण माने गये हैं । ये ६४ कलाएँ हैं इन्ही को वैदिक व तांत्रिक ६४ योगिनियाँ भी कहते हैं । भगवान् भूतेश्वर भैरव योगिनी चक्र में मध्य में विराजमान है (कालसंकर्षणी तंत्र) कलाओं के स्वामी है समय समय पर नाद के द्वारा उन कलाओं का अविर्भाव करते हैं । महर्षि पाणिनि को चौदह सूत्र उन्होंने प्रदान किये थे । सनकादि महर्षियों के उद्धार के लिये उक्त सूत्रों में ही

एक महत्व पूर्ण मंत्र था जो कामकला का अक्षर है। वह मंत्र शिव और शक्ति का वाचक है वह है -"अह"। यह आदिगुरू शंकर की कृपा है यह सृष्टि कला है इसीमें स्थिति कला हैं, प्रलय में यही तीन होने की संहार कला भी है "ननाद ढक्कां नवपंचवारम्-" ईश्वर का यह कलाविज्ञान है जहाँ भौतिक विज्ञान कला की पहुँच नहीं है। सामवेद की गान कला ने पशुपक्षियों में चिरस्थायि भाव से स्थान ले रखा है यथा- हाथी में, निषादास्वर गाय में ऋषमस्वर, घोडे में धैवत, कोमल में पचमस्वर। पक्षियों से अक्षर के उच्चारण कला का विज्ञान सीखना चाहिये। मोर गाना भी जानता और नाचना भी तथा अपनी स्त्री (मयूरी) को प्रसन्न करना भी जानता है । मयूर पक्षी तीन मात्रा बोलता है जिसे प्लुत ३ कहते हैं ओम् का उच्चारण करते हैं । यह उच्चारण सिद्ध माना जाता है। आकाश को देखकर मोर बादल से प्रार्थना करता है "मेहू"। मेघ संस्कृत में बादल को कहते हैं मेघ का अपभ्रंश मेह है। मोर का यह मंत्र प्रायेण सफल होता है। मोर स्त्री संग नहीं करता है नाचने के समय उसके नेत्र का जल जो गिरता है मोरनी उसे पीकर गर्भिणी हो जाती है। इसीलिए मोर पंख झाडा देने से भूत प्रेत भाग जाते है। भगवान् कृष्ण तो मोर पंख ही मुकुट में धारण करते हैं। पशुपक्षियों की भाषा में भी कलाविज्ञान है जैसे प्रात:काल यदि किसी के दरवाजे या छतपर कौआ बोलता है, तो लोग कहते हैं कि आज कोई आनेवाला है तथा यदि कौआ दोपहर में बोले तो लड़ाई होने की सूचना देता है। बिल्ली यदि रास्ता काट गई तो विघ्न हो जाता है यह संकेत कला विज्ञान है। स्तन का दूध पीने वाले बालक को यदि चिडियाओं का पिया हुआ पानी पिला दिया जाय, तो वह बालक पक्षियों की भाषा समझने लगता है। पहले युगों में लोग पशुपक्षियों की भाषा जानते थे। एक उदाहरण तो रामायण में प्रत्यक्ष है"गिद्धराज सुन आरत वानी। रघुकुल तिलक नारि पहिचानी" दशरथ जी का मित्र जटायु था। राम के दरबार में उल्लु, कौआ और कुत्ता भी प्रार्थना के लिये गया था इसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण और रामायण मंजरी में मिलता है। पशु,पक्षी कृतज्ञ भी होते हैं। और मर्यादा का पालन धर्म का पालन आज के युग में वर्तमान धार्मिकों से अधिक करते हैं। शावर भाष्य में लिखा है कुत्ता चतुर्दशी के दिन उपवास करता है।

प्रकृति की कला का वर्णन ऋग्वेद के उष:सूक्त में मिलता है उषादेवी (उषा) प्रातः सूर्योदय से पहिले सूर्य किरण रूपी घोडों के रथ में बैठकर आती है । लोक में जब किसी को हिचकी आती है उस समय हिचकी वाले के आगे स्मरणीय व्यक्ति का नाम लेने पर हिचकी बंद हो जाती है । यह आत्मकला दो मनों का संघटन है । तथा जब हृदय में ध्यान करने से योगी का तार ब्रम्ह से जुड जाता है और वायरलेस की तरह जीव और ब्रम्ह बात भी करते हैं परन्तु उस रहस्य को तीसरा व्यक्ति सुन व समझ नहीं सकता है। वस्तुत: इस कला विज्ञान को तो इन्दुकला नाथ कैलासनाथ उमानाथ ही जानें हम क्या जान सकते हैं ।

श्री राधाकृष्ण शास्त्री
मथुरा.